'21वीं सदी के उपन्यासों में आदिवासी जीवन के विविध आयामः एक विवेचन'

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर (राज॰)

को पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

(यू.जी.सी. रेग्यूलेशन 2009 के अनुसार)

कला संकाय

शोधकर्ता

सीमा कुमारी मीना

शोध निर्देशक

डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा

(प्राध्यापक हिन्दी)

राजकीय महाविद्यालय,टोंक (राज॰)

सम्बद्धता

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर (राज॰)

वर्ष : 2017

Name of Scholar

Seema Kumari Meena

शोधार्थी का नाम

सीमा कुमारी मीना

TITLE OF RESEARCH WORK

(IN ENGLISH)

Various Dimensions of Tribal life in 21st Century Novels: a review

अनुसंधान का विषय

('21वीं सदी के उपन्यासों में आदिवासी जीवन के विविध आयाम: एक विवेचन')

3 Location (अवस्थिति)

3.1 संस्थान/विभाग जहाँ से शोध कार्य किया जायेगा

(INSTITUTION/DEPARTMENT WHERE THE WORK IS TO BE DONE)

GOVT. COLLEGE TONK RAJ.

AFFILATED BY

M.D.S.UNIVERSITY AJMER (RAJ.)

मैं राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय टोंक के हिन्दी विभाग से यह शोध कार्य कर रही हूँ क्योंकि विगत तीस वर्षो से इस महाविद्यालय के हिन्दी विभाग में स्नातकोत्तर कक्षाएँ संचालित हैं। अनेक शोधार्थी भी यहाँ से शोध कर चुके हैं अतः इस महाविद्यालय में इस विषय पर शोध कार्य के लिये पर्याप्त सुविधाएँ उपलब्ध हैं। पुस्तकालय, आदिवासी साहित्य, उपन्यास, आदिवासियों के जीवन से सम्बन्धित विभिन्न पुस्तकें, पत्र पत्रिकाएँ अनुभवी निर्देशक आदि सभी शोध सामग्रियों की सुविधाएँ यहाँ हैं। चूंकि मैं महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर से सम्बद्ध संस्था से शोध कार्य करना चाहती थी, क्योंकि यह विश्वविद्यालय शोध के क्षेत्र में बहुत विश्वसनीय एवं सुविधाजनक है तथा राजकीय महाविद्यालय टोंक इसी विश्वविद्यालय से सम्बद्धता प्राप्त है। विशेषतः मैं अनुभवी व्याख्याता डॉ0 प्रमोद शर्मा जी के निर्देशन में अपना शोध कार्य करना चाहती हूँ और डॉ0 प्रमोद शर्मा जी

राजकीय महाविद्यालय टोंक में कार्यरत है। अतः शोध कार्य के लिये उक्त महाविद्यालय का चुनाव स्वाभाविक है। मैं मूलतः सवाई माधोपुर जिले की रहने वाली हूँ और हमारे क्षेत्र के राजकीय महाविद्यालय के हिन्दी विभाग में स्नातकोत्तर अध्ययन एवं शोध कार्य की सुविधा न होने के कारण मैंने अपने निवास स्थान के निकटतम स्थान टोंक के राजकीय महाविद्यालय में इस कार्य के लिये प्राथमिकता दी है।

3.2 शोध कार्य हेतु भौगोलिक क्षेत्र

(Geographical area of investigation, if any,)

मैने अपने शोध विषय 21वीं सदी के उपन्यासों में आदिवासी जीवन के विविध आयामः एक विवेचन के लिए राजकीय स्नातकोत्तर महाविधालय टोंक को प्राथमिकता दी है।

4 शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य

(INTRODUCTION IMPORTANCE OF PROPOSED INVESTIGATION, OBJECTIVE)

प्रस्तुत शोध का मूल लक्ष्य युग परिवेश से साक्षात्कार चाहे वह सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक व राजनीतिक हो उसे समाज के समक्ष रखकर चेतना लाना। वस्तुतः वर्तमान के भौतिकवादी, अर्थवादी परिवेश में हमारे समाज, संस्कृति, राजनीति सभी क्षेत्रों में स्वार्थपरता और अनैतिकता बढ़ती जा रही है। आज मानव मन से प्रेम, त्याग सहयोग जैसे सद्भाव तिरोहित होते जा रहे है, ओर पाश्चात्य जगत की भोगवादी संस्कृति का प्रभाव हमारे जीवन में निरन्तर बढ़ता जा रहा है। आज इन परिस्थितियों में जो सर्वाधिक त्रस्त है, वह है जन सामान्य और सर्वहारा वर्ग।

आदिवासी साहित्य विमर्श अब तक के अनदेखे मानवीय संघर्ष, आकांक्षा, व्यथा के रूप रंग तथा नए अनुभव को संसार से जोड़ रहा है। यह साहित्य वंचितों, उपेक्षितों, विस्थापित के मुँह खोलने से भारतीय समाज की अधूरी अभिव्यक्ति को पूर्णता प्रदान करने की दिशा में बढता हुआ कदम है। प्रस्तावित शोध विषय के माध्यम से आदिवासियों की मूल समस्याओं तथा आवश्यकताओं की विवेचना के साथ जल, जंगल, जमीन एवं जमीर से जुड़ी भावनाओं तथा स्थानीयता को वैश्विक परिदृश्य पटल पर समझने की सोच विकसित करने का प्रयास किया जा सकेगा।

इस शोध कार्य के माध्यम से आदिवासी जीवन एवं संस्कृति में हो रहे परिवर्तनों को जान सकेगें। तथा उनकी अस्मिता एवं मूल्यों, पारिवारिक संरचना, मानवीय सम्बन्धों, परम्पराओं, प्रथाओं, रीति–रिवाजों, सामाजिक आस्था, शिक्षा, सामाजिक संस्थाओं, जीवनशैली को जानने का अवसर मिलेगा आदिवासी रचनाकारों ने आदिवासियों की भौगोलिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, साहित्यिक विविधता को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है। आदिवासियों की इन्हीं समस्याओं व विविधता को इस शोध के द्वारा उद्घाटित किया जायेगा। क्योंकि ये उपन्यास आदिवासियों के सामाजिक, सांस्कृतिक उत्थान् पतन के सर्वाधिक प्रमाणिक दस्तावेज कहे जा सकते है।

अतः किसी भी मानव समुदाय की जीवन–शैली, सांस्कृतिक विकास एवं समस्याओं को जानने के लिये उनसे सम्बन्धित साहित्य से अधिक अकृत्रिम स्त्रोत और कोई हो ही नहीं सकता। आदिवासी साहित्य के भविष्य पर चर्चा करने का अवसर मिलेगा जिससे इस शोध कार्य की सफलता–असफलता का मूल्यांकन हो जाएगा।

(प्रस्तावित शोध का महत्त्व)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह समाज में रहकर उसके द्वारा निर्धारित मानदण्डों का पालन करते हुये जीवनयापन करता हैं। किसी भी देश का साहित्य वहाँ की परिस्थितियों का प्रतिबिम्ब होता है। अतः वहां के साहित्य का अध्ययन सम्बन्धित वर्ग की सभ्यता, संस्कृति, परम्परा, कला, धर्म, समाज, रीति–रिवाज, दुखः–सुख, एवं सम्पूर्ण आकांशाओं का सूक्ष्म अवलोकन कराने में सहायक होता है। साहित्य समाज का दर्पण होने के कारण आदिवासियों के जीवन पर लिखे गये हिन्दी उपन्यासों के माध्यम से भी हम उनकी सामाजिक दशा, अर्थव्यवस्था, भौगोलिक स्थिति, राजनैतिक स्थिति, सांस्कृतिक तत्त्वों एवं प्रशासनिक व्यवस्था के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेगें।

प्रत्येक समाज के अपने कुछ मानदण्ड होते है जो हमारी समाज व्यवस्था के लिये अनिवार्य है जैसे जनरीतियाँ, प्रथाएँ कानून, लोकाचार, परम्परा, नैतिकता, आदर्श, मूल्य, शिष्टाचार एवं परिपाटी आदि सभी आदिवासी जीवन के मानदण्डों को इस शोध कार्य के द्वारा समझा जा सकेगा। वर्तमान में सम्पूर्ण आदिवासी संक्रमण के दौर से गुजर रहे है। इस संक्रमण के दौरान आदिवासियों में अनेक समस्याएँ उत्पन्न हुई है। इन समस्याओं की प्रकृति और कारण अलग–अलग आदिवासियों में भिन्न–भिन्न है। कुछ आदिवासियों में जनसंख्या वृद्धि हुई है तथा कुछ में जनसंख्या

घट रही है। कई आदिवासी नगरीय संस्कृति के सम्पर्क में आये जिसके फलस्वरूप उनकी मूल संस्कृति में कई परिवर्तन हुए। उनमें दिशाहीनता एवं सांस्कृतिक छिन्न–भिन्नता पैदा हुई और मानसिक असन्तोष बढ़ा है। आदिवासियों के निवास क्षेत्रों में सूदखोर व्यापारी एवं ठेकेदार लोग पहुँच गये। यहाँ पर उन्होंने आदिवासी लोगों का जमकर आर्थिक एवं दैहिक शोषण किया और कम मजदूरी पर उनसे अधिक श्रम लेने लगें। इनकी स्त्रियों के साथ अवैध सम्बन्ध स्थापित किये जिनके फलस्वरूप आदिवासियों में वेश्यावृति पनपी तथा इनके अतिरिक्त कुछ ऐसी समस्याएँ है जो सभी आदिवासियों में समान रूप से विद्यमान हैं, वे निर्धनता, बेगारी, अशिक्षा, ऋणग्रस्तता, एकीकरण, दहेज–प्रथा, बाल–विवाह, स्थानान्तरित कृषि एवं भाषा से सम्बन्धित समस्याओं आदि सभी से ग्रस्त है। इन सभी समस्याओं को आदिवासी जीवन से सम्बन्धित सभी उपन्यासों में देखा जा सकता है। जो मेरे शोध का विषय है अतः इन समस्याओं के बारे में हम आगे आने वाली पीढ़ी को जागरूक कर सकेगें।

समाज सामाजिक सम्बन्धों का जाल है सामाजिक संरचना का निर्माण भी इन्हीं सम्बन्धों द्वारा होता है। जिनमें कटु और मधुर सभी प्रकार के सम्बन्ध घुले–मिले रहते है जैसे भाई–बहन, पति–पत्नी, माता–पिता, दादा–दादी एवं संतति के मधुर सम्बन्धों, सास–बहु के झगड़े, ननद–भाभी की नोंक–झोंक, सपत्नी कलह

आदि संबंधो के अतिरिक्त पारिवारिक अन्तःसम्बन्धों एवं गोत्र अन्तःसम्बन्धों को भी इस शोध के माध्यम से समझा जा सकेगा। मूल्यबोध का समावेश भी इन उपन्यासों की विशिष्टता को प्रदर्शित करता है। सत्य, सदाचार, विश्वास, आस्था, तप, आत्मसमर्पण जैसे जीवन मूल्यों तथा दया, ममता, करूणा, त्याग, उदारता, क्षमा, परोपकार, परदुःखकारता आदि मानवीय मूल्यों एवं देशप्रेम, स्वतन्त्रता, समानता, सहिष्णुता, सहयोग परोपकार, लोकमंगल आदि सामाजिक मूल्यों की रक्षा भी इस शोध के माध्यम से की जा सकेगी।

अतः प्रस्तुत शोध विषय के द्वारा हमें आदिवासी जीवन के सभी अंगों को समझने का अवसर मिलेगा जैसे रहन–सहन, खान–पान, रीति–रिवाज, वस्त्राभूषण, धर्म, परिवार, विवाह नातेदारी, प्रथा, रूढियां, लोकाचार, मूल्य–बोध इतिहास, अर्थव्यवस्था, पर्वोत्सव, शिक्षा, त्योहार, सामाजिक सम्बन्धों, वर्णाश्रम एवं आदिवासी जीवन में प्रचलित समस्याओं आदि आदिवासी जीवन एवं संस्कृति के सभी अंगो को विभिन्न रूप से समझ सकेंगे।

5 प्रस्तावित शोध के विषय पर पूर्व में किये गये कार्यो की समीक्षा
(Review (work already done on the subject of proposed Research study.)

मेरी जानकारी में 21वीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी जीवन के कई आयामो पर कोई शोध कार्य अभी तक नहीं हुआ और वर्तमान में भी नहीं हो रहा है। 21वीं सदी के पूर्व के उपन्यासों पर शोध कार्य अवश्य हो चुका है जिनका विवरण निम्न प्रकार है।

- आदिवासी मराठी साहित्यः प्रमोद मुँगटे 2007, एस. एफ. एस. कॉलेज, नागपुर।
- आदिवासी लोकगीतों में स्त्री, अलका हिवाले मॉडर्न कॉलेज, पुणे।
- भारत के आदिवासीः एक सामाजिक और आर्थिक विवेचन, प्रकाश चंद मेहता, मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर।
- आदिवासी भील मीणा, संतोष कुमार जैन, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
- आदिवासी चुनौतियों के बीच खुलते संभावनाओं के द्वार, अनुपमा कुमारी, जे.टी. एस., पब्लिकेशन्स, दिल्ली।
- आदिवासी समाज के स्त्रियों की दशा और दिशा, भावना श्रीवास, जे.टी.एस पब्लिकेशन्स, दिल्ली।
- आदिवासी समाज हाँसिये से केन्द्र की ओर, डॉ0 रानू वर्मा, जे.टी.एस पब्लिकेशन्स, दिल्ली।

आदिवासी जीवन के कई आयाम अभी अछुते ही है। क्योंकि यह विषय नवीन है और शोधार्थियों का ध्यान इधर कम है। लेकिन वास्तविकता यह है कि 21वीं सदी

के आदिवासी जीवन पर लिखे गये ये उपन्यास उनके जीवन का प्रमाणिक दस्तावेज है। फिर भी इस विषय पर कोई शोध कार्य नहीं किया गया अतः यह अभाव मुझे खला और इसी कारण 21वीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी जीवन के विविध आयाम विषय पर शोध कार्य करना चाहती हूँ।

आदिवासी समाज में पली बढ़ी होने के कारण इस वर्ग की विभिन्नताओं से मैं भली–भांति परिचित हूँ और इस पृष्ठभूमि से जुड़ी होने के कारण में इन पर निर्विवाद रूप से प्रकाश डाल सकती हूँ। आदिवासी समाज और संस्कृति से गहरे जुड़े होने के कारण इसकी विशेषताएँ एवं न्यूनताएँ मुझे ज्ञात है। मेरी यही कोशिश रहेगी कि अपने शोध कार्य के अंतर्गत आदिवासी जीवन के विविध पक्षो पर नई रोशनी डाल सकूँ। मेरे अनुसार आदिवासियों के आनंन्द का स्त्रोत उनकी संस्कृति और जीवन धारा है। अतः मैं अपने शोध कार्य के अंतर्गत यह देखना चाहती हूँ कि आदिवासी ऐतिहासिक, सामाजिक, भौगोलिक, भाषिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक स्थितिया कहाँ है, कैसें है और क्यों है? 'मै' आदिवासी समाज का विस्तृत अध्ययन इन उपन्यासों के अंतर्गत करने की कोशिश करूँगी। अपनी सीमित शक्तियों एवं सीमाओं के बावजूद में आदिवासी जीवन के अधिकांश पक्षों को अपने शोध कार्य के माध्यम से सामने ला सकूँ ऐसा मेरा प्रयास रहेगा।

6 शोध के प्रस्तावित क्षेत्र में शोध रिक्तता की पहचान एवं अपेक्षित अवधि का विवरण

(Research Gaps identified in the proposed field of investigation)

मैं अपने शोध कार्य को लगभग 2 से 3 वर्ष में पूर्ण करके दूँगी। क्योंकि मेरे शोध का विषय 21वीं सदी के आदिवासी उपन्यासों से सम्बन्धित हैं और ये सम्पूर्ण उपन्यास वर्तमान में मेरे पास उपलब्ध नहीं है अतः सर्वप्रथम तो में विभिन्न प्रकाशन स्थलों पर जाकर आदिवासी जीवन से सम्बन्धित उपन्यासों को संग्रहित करूँगी और उसके पश्चात् इनका गहनता से अध्ययन कर उनमें अभिव्यक्त आदिवासी जीवन, समाज, संस्कृति, समस्याओं के बारे में जानकारी प्राप्त करूँगी क्योंकि आदिवासियों का जीवन एवं संस्कृति विभिन्नता युक्त है। जिनको शास्त्रीय दृष्टि से विश्लेषित करना थोड़ा कठिन कार्य है। इसलिए सर्वप्रथम में उनके जीवन एवं संस्कृति के बारे में उपलब्ध अन्य सहायक ग्रन्थों का सहारा लेकर जानकारी प्राप्त करूँगी। इसके पश्चात् आदिवासियों की ऐतिहासिक, भौगोलिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक स्थिति, अर्थव्यवस्था, शिक्षा, आदिवासी विकास तथा उनके सामाजिक जीवन, संस्कृति एवं समस्याओं तथा उनमें परिवर्तन की प्रक्रिया का गहनता से अध्ययन करूँगी। यद्यपि पूर्व में आदिवासी जीवन पर अनेक शोध कार्य हो चुके हैं जिनमें आदिवासी इतिहास, समाज, संघर्ष, स्त्रियों की स्थिति, अंधविश्वास, साहित्य,

लोक संस्कृति एवं समस्याओं पर तो प्रकाश डाला गया है लेकिन उनका शास्त्रीय पक्ष किसी ने स्पष्ट नहीं किया है। इसलिए मैं अपने इस शोध कार्य के माध्यम से आदिवासियों के जीवन पर विविध दृष्टिकोण से विचार करूंगी जिसमें आदिवासी समाज का स्थापित समाजशास्त्र की कसौटी से अध्ययन करते हुए यह उद्घाटित करना है कि आदिवासी समाज स्थापित समाजशास्त्र का किन–किन संदर्भ एवं स्थितियों में अतिक्रमण करता है, और क्या स्थापित समाजशास्त्र के प्रतिमान आदिवासी समाज को समझने एवं विश्लेषित करने में पूरी तरह सक्षम है। अतः मैं 21वीं सदी के उपन्यासों में अभिव्यक्त आदिवासी जीवन से सम्बन्धित विभिन्न समाजशास्त्रीय तत्वों जैसें सामाजिक संस्थाओं, सामाजिक मानदण्डों, वर्णाश्रम, धर्म, कर्म, पुर्नजन्म, संस्कार, पुरूषार्थ, ऋण यज्ञ, पारिवारिक संरचना, जीवन–शैली, सामाजिक सम्बन्धों, मूल्यबोध, शिष्टाचार, लोकाचार, परम्पराओं, प्रथाओं, समस्याओं एवं सामाजिक परिवर्तन की स्थिति को स्पष्ट करना चाहूँगी। ताकि आदिवासी समाज को अन्य समाजों के समक्ष ला सकें। इस प्रकार इन सम्पूर्ण तथ्यों को विश्लेषित एवं लिपिबद्ध करने में 2 से 3 वर्ष का समय व्यतीत हो जायेगा।

अतः इस शोध कार्य को पूरा करने के लिये मुझे 2 से 3 वर्ष की अवधि चाहिये।

7 मुख्य परिकल्पना

(MAJOR HYPOTHESIS)

प्रत्येक मनुष्य समुदाय को मानवीय प्रतिष्ठा के साथ जीवन जीने का अधिकार है और प्रतिष्ठित जीवन के लिए जरूरी है समाज की अपनी व्यवस्था, उत्पादन के अपने साधन, निजि आजादी। यही लोकतान्त्रिक व्यवस्था की भी आत्मा है मुख्य धारा के लोगो के लिए तो इनका औपचारिक रूप प्रवल है लेकिन मुख्य धारा से कटे हुए लोगों में किसको क्या मिल पाए इसका कोई ठिकाना नही है हमारे देश में भी एक ऐसा समुदाय है जिसे उनकी जीवन–शैली के अनुरूप जीने के अधिकार से वंचित किया जा रहा है और वह है सदियो' से शोषित अभिशप्त देश का मूल निवासी आदिवासी। ऐसा लगता है कि आदिवासीयों के शोषण की कहानी उनके जन्म के साथ ही आरम्भ हो जाती है। रामायण , महाभारत में इन्हें राक्षस वधिक, दस्यु आदि हिंसा जनक शब्दों से सम्बोधित किया जाता है और वर्तमान में भी आदिवासी उच्चारण मात्र से हमारे सामने अर्द्धनग्न, तीरकमान लिये शिकार की खोज में वन–वन भटकते, पसीने से लतपथ , पशुवत जीवनयापन करने वाला, निरीह अभावग्रस्त, अस्त–व्यस्त मानव उपस्थित हो जाता है तो इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि उनका आज भी कैसा जीवन है।

आदिवासियों की पहचान, उनकी विशिष्ट जीवन शैली, आत्मनिर्भता, कृषि और श्रम पर आधारित समाज व्यवस्था, उनकी भाषा , संस्कृति से है। भारत के संविधान में भी इन्हीं कारणों से इनके लिए अलग से व्यवस्था की गई है ताकि उनकी विशिष्टता की सुरक्षा करते हुए उनके अनुरूप उनका मार्ग प्रशस्त हो सके। विडम्बना यह है कि संविधान में अलग से व्यवस्था होने के बाद भी आदिवासी समाज, संस्कृति और भाषा विलुप्त होने के कगार पर है अत इन सभी आयामों को में अपने शोध के माध्यम से प्रकाश में ला सकॅू। उनकी संस्कृति में सामुहिकता , सहयोगिता , सहभागिता, जाति समानता एवं सबसे मुख्य प्रकृति से निकटतम सम्बन्ध है। जो अन्य सभी संस्कृतियों से आदिवासी संस्कृति को पृथक करता है। उनका जीवन बिल्कुल साधारण और दृष्टिकोण उपयोगितावादी है। इनमें संग्रह एवं प्रतिशोध की अपेक्षा त्याग, दया, परोपकार, क्षमा एवं वसुधैवकुटुम्बकम् की भावना है। जल, जमीन और जंगलों पर इनका अबाध पारम्परिक अधिकार था। इनके विना आदिवासी समाज जीवित नही रह सकता ना ही इनकी भाषा, संस्कृति, धर्म एवं समाज की कल्पना की जा सकती हैं लेकिन बदलते परिपेक्ष्य में विकास के नाम पर जंगलों से आदिवासियों को दूर किया जा रहा है और आजिविका के साधनों से वंचित कर भुखमरी, बेरोजगारी , बीमारी, ऋणग्रस्तता, लाचारी, अशिक्षा के गर्त में धकेला जा रहा है अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए इन्होंने कई विद्रोह किये

परन्तु उन्हें दबा दिया जाता है ताकि इनकी विवशता का लाभ उठाकर इस्तेमाल किया जा सके। मेरा विश्वास है कि प्रस्तावित शोध के माध्यम से इन सभी पहेलुओं को प्रकाश में लाया जा सकेगा। वर्तमान औद्योगिकरण, नगरीकरण के कारण इनके जीवन में अनेक समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं ऐसी स्थिति में समाज के इस समुदाय को तथाकथित शिक्षित सुसंस्कृत समाज से जोड़ना , मानव समाज की मुख्य धारा में सम्मिलित करना आज की महती आवश्यकता है। हमारी केन्द्रीय और राज्य सरकारे भी इस विषय में विभिन्न योजनाओं के माध्यम से सक्रिय दिखाई देती है।

इस प्रकार की सारी चेतना और सक्रियता को जागरूकता बनाने का बीड़ा सबसे पहले साहित्यकारों द्वारा ही उठाया गया है, और अपनी विभिन्न रचनाओं, विभिन्न उपन्यासों में समाज के इस वर्ग की जीवन रेखाओं और संस्कृति को उजागर कर समाज के सामने लाने का प्रयास किया गया है। इन्हीं प्रयासों का परिणाम है कि आज मानव समाज का यह वर्ग बहुत कुछ समाज की मुख्यधारा से जुड़ रहा है। अतः इस आदिवासी समाज की संस्कृति को सही मायनों में समझते हुये उसके विभिन्न पक्षों एवं समस्याओं को परखते हुए उसके राजनीतिक सामाजिक एवं आर्थिक हल निकालने की ओर कदम बढ़ाने के लिये ऐसे प्रयासों की ओर अधिक आवश्यकता है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में समाज के ऐसे ही वर्ग के जीवन की उसके समाज और संस्कृति की विभिन्न परिस्थितियों समस्याओं और उनके समाधानों विषय के विभिन्न विषयों का वैज्ञानिक अध्ययन करने का प्रयास किया जा रहा है, जिससे वर्तमान में इस वर्ग की विभिन्न समस्याओं का हल निकालने में मदद मिलेगी और यह आदिवासी समाज मानव समाज की मुख्यधारा में सम्मलित होने में और आगे बढ सकेगा। इन्हीं पूर्व कल्पनाओं के साथ प्रस्तुत शोध प्रबंध में इस समुदाय के सामाजिक सांस्कृतिक जीवन का यथाविधि वैज्ञानिक रीति से अध्ययन करते हुए निकर्षों का प्रतिपादन करना मेरा प्रयास रहेगा।

8 शोध प्रविधि

(Research Methodology)

प्रस्तुत शोध आदिवासी जीवन के विविध आयामो पर आधारित है अतः विश्लेषणात्मक अध्ययन पर जोर दिया जायेगा। आदिवासी जीवन एवं संस्कृति को निकट से देखने का सजग प्रयास किया जायेगा। इसके लिये आदिवासी क्षेत्रों की यात्रा आदिवासियों से चर्चा एवं आदिवासी विर्मशकारों के साक्षात्कार भी लिए जायेगें। आदिवासियों की समस्याओं पर समग्रता से विवेचन एवं विश्लेषण किया जाएगा। सहायक पुस्तकें तथा आधार पुस्तकें और उनके आधार पर शोध विषय के लिए दृष्टिकोण का विकास, पुस्तकालयों तथा विविध पत्र–पत्रिकाओं का उपयोग, दूरसंचार इंटरनेटर पर विषय से सम्बन्धित उपलब्ध जानकारी का उपयोग किया जायेगा। सम्बन्धित आवश्यक स्थलों का भ्रमण किया जायेगा। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोंण एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण की आवश्यकतानुसार मदद ली जायेगी। इस प्रकार शोध कार्य की प्रमुख प्रविधियाँ, विवेचन, विश्लेषण, साक्षात्कार सर्वेक्षण, क्षेत्रीय भ्रमण, व्याख्यात्मक एवं वर्णनात्मक आदि होगी।

प्रस्तावित शोध कार्य की अध्यायवत् विस्तृति

प्राक्कथन

प्रथम अध्यायः आदिवासीः अवधारणा एवं उसके विभिन्न पक्ष

01. ऐतिहासिक एवं भौगोलिक प्ररिप्रेक्ष्य।

02. सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्ररिप्रेक्ष्य।

03. राजनैतिक परिप्रेक्ष्य।

04. आर्थिक परिप्रेक्ष्य।

05. शैक्षिक परिप्रेक्ष्य।

द्वितीय अध्यायः 21वीं सदी के आदिवासी जीवन से सम्बन्धित प्रमुख उपन्यास एवं उपन्यासकार (संक्षिप्त परिचय)

तृतीय अध्यायः 21वीं सदी के उपन्यासों में आदिवासी सामाजिक संस्थाएँ एवं प्रतिमान।

(3.1) उपन्यासों में आदिवासी सामाजिक संस्थाएँ:–

(अ) विवाह संस्था।

(ब) परिवार संस्था।

(स) नातेदारी संस्था।

(द) शैक्षणिक संस्था।

(य) राजनैतिक संस्था।

(3.2) उपन्यासों में सामाजिक प्रतिमानों की अभिव्यक्तिः–

(अ) सामाजिक प्रतिमान की अवधारणा।

(ब) जनरीतियाँ।

(स) लोकाचार।

(द) रूढ़ियाँ।

(य) प्रथा।

(र) परम्परा।

(ल) परिपाटी एवं शिष्टाचार।

(व) फैशन और धुन

(स) प्रथागत कानून

चतुर्थ अध्यायः– 21वीं सदी के उपन्यासों में आदिवासी संस्कृतिः–

(अ) संस्कार।

(ब) वर्णाश्रम।

(स) कर्म एवं ।

(द) पुरूषार्थ।

(य) धर्म।

(र) ऋण एवं यज्ञ।

(ल) पर्वोत्सव, त्योहार।

(व) मांडना भित्तिचित्र।

(श) खान–पान, रहन– सहन, वेश–भूषा।

(स) अतिथि सत्कार।

पंचम अध्यायः 21वीं सदी के उपन्यासों में आदिवासी जीवन दर्शन एवं सामाजिक सम्बन्ध

(5.1) उपन्यासों में आदिवासी जीवन दर्शन

(अ) मान्यताएँ।

(ब) आचार–विचार।

(स) लोक–विश्वास।

(द) नैतिकता।

(य) लोकधर्म।

(र) सौन्दर्य बोध।

(ल) स्त्रियों के प्रति दृष्टिकोण।

(व) मूल्यबोध।

(1) मानवीय मूल्य।

(2) जीवन मूल्य।

(3) सामाजिक मूल्य

(5.2) उपन्यासों मे सामाजिक–सम्बन्धों की अभिव्यंजना :–

(अ) प्राथमिक सामाजिक सम्बन्ध

(ब) वैवाहिक सम्बन्ध

(स) रक्त सम्बन्ध

(द) पारिवारिक अन्तर्सम्बन्ध

(य) अप्रिय सामाजिक सम्बन्ध

(र) परिहार सामाजिक सम्बन्ध

(ल) गोत्र अन्तर्सम्बन्ध

षष्ठम अध्याय: 21वीं सदी के उपन्यास और सामाजिक परिवर्तन की प्रकिया

6.1 आदिवासी समाज का परिवर्तित परिप्रेक्ष्य

(अ) भूमि –हस्तान्तरण

(ब) विकास, विस्थापन एवं विघटन

(स) गरीबी

(द) बेरोजगारी

(य) अशिक्षा

(र) अकाल एवं महामारी

(ल) नशाखोरी

(व) भ्रष्टाचार

(श) दासता

(ष) बाजारवाद

6.2 औद्योगिकरण एवं नगरीकरण का प्रभाव

6.3 समाज में स्त्रियों की स्थिति

6.4 आदिवासी एवं मानवाधिकार

6.5 शैक्षिक विकास में परिवर्तन

6.6 जल, जमीन और जंगल

6.7 राजनैतिक एवं प्रशासनिक भागीदारी

6.8 अन्य

उपसंहारः शोध की सीमाएँ, महत्त्व एवं उपलब्धियाँ।

आधार ग्रन्थ

क्र.सं.	पुस्तक	लेखक	प्रकाशन/वर्ष
1	ग्लोबल गाँव के देवता	रणेन्द्र	भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, 2009
2	पठार पर कोहरा	राकेश कुमार सिंह	भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, 2003
3	धूणी तपे तीर	हरिराम मीणा	साहित्य उपक्रम,दिल्ली 2008
4	बाजत अनहद ढोल	मधुकर सिंह	वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2005
5	जो इतिहास में नहीं है	राकेश कुमार सिंह	भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, 2008
6	परजा	गोपीनाथ महान्ती	भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, 2007
7	सीता	रमणिका गुप्ता	ज्योति लोक प्रकाशन 2010
8	रूप तिल्ली की कथा	श्री प्रकाश मिश्र	पार्श्व पब्लिकेशन, अहमदाबाद 2006
9	जंगल–जंगल जलियांवाला	हरिराम मीणा	शिल्पायन, दिल्ली, 2008
10	आहत देश	अरून्धति रॉय	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 2012
11	अरण्य में सूरज	श्रीमती अजित गुप्ता	सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, 2009
12	मगरी मानगढ़ गोविन्दगिरी	राजेन्द्र मोहन भटनागर	वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2011
13	काला पादरी	तेजेन्दर	नेशनल पेपर बैक्स, नईदिल्ली प्रथम संस्करण 2005
14	आदिभूमि	प्रतिभा राय	वाणी प्रकाशन, 2002
15	मरग गोडा नीलकण्ठ हुआ	महुआमाजी	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2012
16	काला पहाड़	भगवानदास मोरवाल	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2004

सन्दर्भ सूची

(Bibliography)

क्र. सं.	लेखक	पुस्तक	प्रकाशन	वर्ष
1	रमणिका गुप्ता	आदिवासी साहित्य यात्रा	जैन बुक एजेन्सी	2008
2	रमणिका गुप्ता	आदिवासी कौन	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	2008
3	रमणिका गुप्ता	आदिवासीः– विकास से विस्थापन	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	2008
4	रमणिका गुप्ता	भारत के आदिवासी लेखकः परिचय एवं अवदान	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	2008
5	मधुसूदन त्रिपाठी	भारत के आदिवासी	आर.आर. बुक्स, दिल्ली	2008
6	चन्द्रकांत बांदिवडेकर	आधुनिक हिन्दी उपन्यासः सृजन व आलोचना	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	1985
7	चमन लाल	प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यास	हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़	1988
8	प्रेम कुमार	हिन्दी उपन्यास अन्तरंगः पहचान	गिरनार प्रकाशन, गुजरात	1983
9	महीप सिंह	हिन्दी उपन्यासः समकालीन परिदृश्य	लिपि प्रकाशन दिल्ली	1980
10	रामदरश मिश्र	आज का हिन्दी साहित्य संवेदना व दृष्टि	अभिनव प्रकाशन, अजमेर	1975
11	रामदरश मिश्र	हिन्दी उपन्यास के 100 वर्ष	गिरनार प्रकाशन, गुजरात	1984
12	गोपाल राय	हिन्दी उपन्यास का इतिहास	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	2001
13	इन्द्रनाथ मदान	आधुनिकता और हिन्दी उपन्यास	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	1998

14	पूरणचंद जोशी	परिवर्तन और विकास के सांस्कृतिक आयाम	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	1987
15	पुरूषोत्तम अग्रवाल	संस्कृतिः वर्चस्व और प्रतिरोध	राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली	1995
16	मैनेजर पाण्डे	साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका	हरियाणा साहित्य अकादमी	1989
17	डॉ. उमराव सिंह	प्रेमचदोत्तर हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक चेतना	अमरप्रकाशन अहमदाबाद	1983
18	रामविलास शर्मा	लोकजीवन और साहित्य	विनोद पुस्तक, आगरा	1955
19	देवीशंकर अवस्थी	रचना और आलोचना	मैकलिन प्रकाशन, दिल्ली	1979
20	रामदरश मिश्र	हिन्दी के आंचलिक उपन्यास	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	1996
21	श्यामचरण दुबे	विकास का समाजशास्त्र	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	1996
22	श्यामचरण दुबे	परम्परा, इतिहास बोध व संस्कृति	राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली	1991
23	नन्द दुलारे वाजपेयी	हिन्दी साहित्य, 20वीं शताब्दी	लोक भारती, इलाहाबाद	1990
24	मैनेजर पाण्डे	साहित्य और इतिहास दृष्टि	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	2000
25	मुकुन्द द्विवेदी विवेकीराय	हिन्दी उपन्यासः युग चेतना और पाठकीय संवेदना	लोक भारती, इलाहाबाद	1970
26	डॉ0 विवेकीराम	आधुनिक उपन्यास, विविध आयाम	अनिल प्रकाशन, इलाहाबाद	1970
27	डॉ0 इन्द्रनाथ मदान	आज का हिन्दी उपन्यास	राजकमल प्रकाशन	1966
28	गोपाल कृष्ण शर्मा	उपन्यास व समाज	तारामण्डल प्रकाशन, अलीगढ़	1986
29	डॉ0 नगेन्द्र	हिन्दी साहित्य का इतिहास	नेशनल पब्लिशिंग, हाउस,	2002

			दिल्ली	
30	रामस्वरूप चतुर्वेदी	हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास	लोकभारती, इलाहाबाद	1989
31	नित्यानंद तिवारी	सृतनशीलता का संकट	राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली	1991
32	तेजमलदक	भारतीय ग्रामीण समाजशास्त्र	किताब महल प्रकाशन, दिल्ली	1963
33	वागेश्वर सिंह परिहार	भारतीय ग्रामीण समाज	साहित्य भवन, इलाहाबाद	1968
34	निर्मल वर्मा	शताब्दी के ढलते वर्षों में हिन्दी उपन्यास	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	1984
35	सुरेश सिन्हा	हिन्दी उपन्यास	लोकभारती, साहित्य भवन	1984
36	डॉ0 भगवती प्रसाद शुक्ल	आधुनिकता और समकालीन रचना संदर्भ	ग्रथंम प्रकाशन, कानपुर	1972
37	डॉ0 नगेन्द्र मोहन	आधुनिकता और समकालीन रचना संदर्भ	आदर्श साहित्य प्रकाशन, दिल्ली	1973
38	ए.आर. देसाई	भारत का विकास मार्ग	हिन्दी माध्यम कार्यन्वय, निदेशालय दिल्ली, वि.वि.	1989
39	हरिशंकर प्रसाद	विकास की चुनौती	शोध माध्यम, पटना	1997
40	सत्यनारायण व्यास	जनजातीय लोकगीत एक अध्ययन	अंकुर प्रकाशन, उदयपुर	2002
41	कँवल भारती	दलित विमर्श की भूमिका	साहित्य उपक्रम, इलाहाबाद	2002
42	चमनलाल	भारतीय साहित्य में दलित व स्त्री	सारांश प्रकाशन, दिल्ली	2001
43	रोमिला थापर	भारत का इतिहास	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	2003
44	श्योराज सिंह	दलित क्रांति का साहित्य	संगीता प्रकाशन, दिल्ली	2002

45	रामशरण शर्मा	शूद्रों का प्राचीन इतिहास	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	2003
46	नेमिचंद सिंह	अधुरे साक्षात्कार	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	1989
47	आर, सुरेन्द्रन	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास	लोकभारती, इलाहाबाद	1997
48	डॉ0 त्रिभुवन	हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद	हिन्दी प्रचारक, वाराणसी	1965
49	कमलेश्वर	नई कहानी की भूमिका	ईशान प्रकाशन, दिल्ली	1991
50	डॉ0 शरण कुमार लिम्वाले	दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	1999
50	शानी	शालवनों का दीप	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	1996
51	सत्यनारायण लाल	अभिनव शिक्षाशास्त्र	बुनियादी साहित्य मंदिर, पटना	1970
52	डॉ0 श्यामसुंदर घोष	भारतीय मध्यवर्ग	बिहारी हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना	1982
53	प्रो. दुर्गाप्रसाद गुप्ता	संस्कृति का अकेलापन		
54	डॉ0 मुकेश मिरोठा	दलित विमर्श दशा दिशा	ए.आर.पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	2016
55	पवन कुमार शर्मा	भारत के मध्यवर्ग की अजीब दास्तान	राजकमल पब्लिशिंग, पटना	1999
53	शानी	कालाजल	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली	1981
54	डॉ0 विवेकीराय	स्वातन्त्र्योत्तर कथा साहित्य व ग्राम चेतना	लोकभारती, इलाहाबाद	1974
55	प्रकाशचंद मेहता	भारत के आदिवासी	शिवा पब्लिशिंग डिस्ट्रीब्यूटर्स, उदयपुर	1993

56	संतोष कुमारी जैन	आदिवासी भील मीणा	यूनिक ट्रेडर्स, जयपुर	1949
57	शकुन्तला मीना	मीना जाति का अभ्युदय	आलोक प्रकाशन चौड़ा रास्ता, जयपुर	2006
58	वीरेन्द्र प्रकाश शर्मा	समाजशास्त्र के सिद्धांत	पंचशील प्रकाशन, जयपुर	2001
59	वीरेन्द्र प्रकाश शर्मा	समाजशास्त्र	पंचशील प्रकाशन, जयपुर	2001
61	वीरेन्द्र प्रकाश शर्मा	भारतीय समाज	पंचशील प्रकाशन, जयपुर	2001
62	लक्ष्मीनारायण मीना	मीणा जनजाति एक परियच	हिन्दी ग्रंथ अकादमी, वाराणसी	1993
63	एम.एल.गुप्ता. एवं डी.डी. शर्मा	समाजशास्त्र	साहित्य भवन, आगरा	2011
64	राजबली पाण्डेय	हिन्दू संस्कार	चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी	1978
65	रामनरेश त्रिपाठी	ग्राम साहित्य	आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली	1952
66	गंगाधर भट्ट	संस्कृत काव्य में नीति तत्त्व	बाफना, प्रकाशन जयपुर	1971
67	गोस्वामी तुलसीदास	रामचरितमानस	गीता प्रेस, गोरखपुर	2000

हिन्दी शब्दकोश

क्र. सं.	लेखक	पुस्तक	प्रकाशन	वर्ष
1	डा0 नगेन्द्र (सं)	मानविकी परिभाषिक कोश साहित्य खण्ड	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	1965
2	नगेन्द्र वसु	हिन्दी विश्वकोश	स्वयं प्रकाशन, कलकत्ता	1972
3	डॉ0 हरदेव बाहरी	हिन्दी शब्दकोश	राजपाल एण्ड संस, दिल्ली	1995
4	धीरेन्द्र वर्मा	हिन्दी साहित्य कोश	ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी	1985
5	धीरेन्द्र वर्मा	हिन्दी साहित्य कोश, भाग–I	ज्ञानमंडल लिमिटेड, बनारस	1958

अंग्रेजी ग्रन्थ

1. एन.साइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटेनिया, भाग 10 ऑक्सफोर्ड, लंदन।
2. स्टेण्डर्ड डिक्शनरी ऑफ फॉकलोर, भाग– प्रथम, न्यूयार्क, 1949
3. दी हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ इण्डियन पीपुलः के.सी. मजूमदार भारतीय विद्या भवन, वम्बई, 1965
4. लूसिए गोल्डमानः मेथड्स इन दी सोशियोलोजी ऑफ लिटरेचर, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, लंदन 1981
5. जॉन हॉलः सोशियोलॉजी ऑफ लिटरेचर, लॉग मैंन, लंदन, 1979
6. फादर वुल्केः एन इंग्लिश हिन्दी डिक्शनरी, बिहार कैथेलिक द्वितीय, 1974
7. ऑक्सफोर्ड इंग्लिंश डिक्शनरी : ऑ. यूनि. प्रेस लंदन, 1933

पत्र—पत्रिकाएं

क्र.सं.	पत्रिका	प्रकाशन
1	आलोचना,	नामवरसिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,
2	हंस	राजेन्द्र यादव, दिल्ली
3	दलित साहित्य	जय प्रकाश कर्दम
4	युध्दरत आम आदमी	रणविका गुप्ता, दिल्ली
5.	अरावली उद्घोष	डॉ0 जनकसिंह, उदयपुर
6	राजस्थान पत्रिका	कपूरचंद कुलिश, जयपुर।
7	संबोधन	कमर मेवाड़ी, उदयपुर
8	दैनिक भास्कर	रमेशचंद गुप्ता, जयपुर, राजस्थान
9	जनसत्ता	ओम धानवी, दिल्ली
10	उद्बोधन	राजसमंद
11	जया ज्ञानोदय	रवीन्द्र कालिया, भारतीय ज्ञानपीठ
12	वर्तमान साहित्य	संपादक धनंजय, इलाहाबाद
13	अणिमा	संपादक शरद देवड़ा, कलकत्ता,
14	मधुमति	साहित्य अकादमी, उदयपुर
15	कथादेश	प्रभाकर श्रोत्रिय, कलकत्ता
16	आदिवासी साहित्य	गंगा सहाय मीणा, दिल्ली
17	अपनी माटी	जितेन्द्र यादव, चित्तौडगढ़
18	आदिवासी सत्ता	श्री के.आर.शाह, छत्तीसगढ़
19	आदिवासी	वन्दना टेटे, झारखण्ड
20	संकल्प	डॉ. टी.मोहनसिंह, हैदराबाद

Name & Signature of Supervisor
With Date & Seal.
12/7/018
Associate Professor
Govt. P.G. College
Tonk (Raj.)

अनिताकुमारी
12/07/2018
Signature of the Candidate
With Date